International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 02(IV), April- June, 2025, pp. 135-143

रैवासा धाम के पर्यावरणीय प्रबंधन की चुनौतियाँ और समाधान

अमित पंवार*

विद्यार्थी, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान।

*Corresponding Author: amitpanwar0143@gmail.com II DOI: 10.62823/IJEMMASSS/7.2(IV).7883

सार

रैवासा धाम, सीकर ज़िले का एक प्रमुख धार्मिक स्थल, अपनी ऐतिहासिक महत्ता और आध्यात्मिक आकर्षण के कारण प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। किंतु धार्मिक पर्यटन और बड़े पैमाने पर आयोजित मेलों के परिणामस्वरूप यहाँ की पर्यावरणीय स्थिति पर निरंतर दबाव बढ़ रहा है। इस शोध में रैवासा धाम की प्रमुख पर्यावरणीय समस्याओंकृकचरा प्रबंधन, जल प्रदूषण एवं जल संकट, वायु एवं ध्वनि प्रदूषण, हरित आवरण में कमी, पर्यावरणीय जागरूकता का अभाव, और भीड़ प्रबंधनकृका गहन अध्ययन किया गया है। शोध के लिए प्राथमिक स्रोतों में स्थल–निरीक्षण, स्थानीय निवासियों और मंदिर प्रबंधन के साक्षात्कार, तथा फील्ड सर्वेक्षण का उपयोग किया गया, जबकि द्वितीयक स्रोतों में सरकारी रिपोर्ट, शोध लेख और समाचार पत्रों का सहारा लिया गया। गुणात्मक और मात्रात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान केवल अस्थायी उपायों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए दीर्घकालिक, सामुदायिक और तकनीकी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इस अध्ययन में समाधान के रूप में कचरा प्रबंधन के लिए ठोस नीति, जल संरक्षण और अपशिष्ट जल उपचार, वायु एवं ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण, हरित आवरण की बहाली, पर्यावरणीय जागरूकता एवं शिक्षा, भीड़ प्रबंधन की स्थायी योजना और स्थानीय सहभागिता जैसे बहुआयामी उपाय सुझाए गए हैं। इन उपायों का उद्देश्य न केवल रैवासा धाम की स्वच्छता और पर्यावरणीय संतुलन को बहाल करना है, बल्कि इसे अन्य धार्मिक स्थलों के लिए एक आदर्श मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना भी है। शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि प्रशासन, मंदिर प्रबंधन, स्थानीय समुदाय और श्रद्धालु संयुक्त रूप से इन नीतियों को अपनाएँ, तो रैवासा धाम आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी पवित्रता, सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सौंदर्य को संरक्षित रख सकता है। इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल एक धार्मिक स्थल की पर्यावरणीय चुनौतियों और उनके समाधानों का दस्तावेज़ है, बल्कि आस्था और पर्यावरण संरक्षण के संतुलित सहअस्तित्व का भी प्रमाण है।

शब्दकोशः *रैवासा धाम, पर्यावरणीय प्रबंधन, कचरा प्रबंधन, जल संरक्षण, हरित आवरण।*

प्रस्तावना

सीकर ज़िले की शांत और आध्यात्मिक आभा से ओतप्रोत भूमि पर बसा रैवासा धाम सदियों से श्रद्धा, भक्ति और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक रहा है। यहाँ की हवा में भजन–कीर्तन की मधुर धुन घुली होती है, तो गलियों में प्रसाद और फूलों की सुगंध बिखरी रहती है। स्थानीय जनमानस ही नहीं, बल्कि दूर–दराज़ के राज्यों से आने वाले श्रद्धालु भी यहाँ अपनी आस्था के दीप प्रज्वलित करने आते हैं। हर वर्ष आयोजित होने वाले भव्य मेले, संकीर्तन, और संतों के प्रवचन इस धाम को केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि जीवंत सांस्कृतिक धरोहर बना देते हैं। लेकिन इस धार्मिक उमंग और आस्था के महासागर के बीच एक शांत परंतु गंभीर समस्या आकार ले रही हैकृपर्यावरणीय असंतुलन। भीड़–भाड़ के दिनों में गलियों से लेकर मंदिर प्रांगण तक फैला कचरा,

प्लास्टिक की थैलियों का अंबार, जल स्रोतों पर बढ़ता दबाव, और ध्वनि प्रदूषण का बढ़ता स्तर, इस पावन स्थल की पवित्रता और प्राकृतिक संतुलन को चुनौती दे रहा है। श्रद्धालुओं की संख्या में निरंतर वृद्धि और आधुनिक सुविधाओं की मांग ने यहाँ के संसाधनों पर इतना दबाव बना दिया है कि यदि समय रहते ठोस कदम न उठाए गए तो आने वाली पीढ़ियाँ इस धाम को उसी प्राकृतिक और पवित्र स्वरूप में नहीं देख पाएँगी, जैसा आज हम देखते हैं।

रैवासा धाम का पर्यावरणीय संरक्षण केवल प्रशासनिक ज़िम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह एक सामूहिक दायित्व हैकृमंदिर प्रबंधन, स्थानीय समुदाय, पर्यावरणविद, स्वयंसेवी संगठन और श्रद्धालु सभी मिलकर इस कार्य में सहभागी बन सकते हैं। यह शोध पत्र इसी विचारधारा से प्रेरित होकर तैयार किया गया है, जिसमें स्थल–निरीक्षण, स्थानीय लोगों के साक्षात्कार और विभिन्न पर्यावरणीय रिपोर्टों के विश्लेषण के आधार पर, यहाँ की प्रमुख पर्यावरणीय चुनौतियों को रेखांकित किया गया है। साथ ही, इसमें ऐसे समाधान प्रस्तावित किए गए हैं जो न केवल व्यवहारिक हैं, बल्कि धार्मिक आस्था और पारंपरिक मूल्यों के अनुरूप भी हैं। यह अध्ययन रैवासा धाम को एक ''आदर्श पर्यावरण–संवेदी धार्मिक केंद्र'' के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक प्रयास है, ताकि आस्था और पर्यावरण दोनों का संतुलन सदैव बना रहे।

शोध समस्या (Research Problem)

रैवासा धाम, सीकर का एक प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्र, प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालुओं और पर्यटकों की आस्था का केंद्र बनता है। यहाँ आयोजित होने वाले भव्य मेले, संकीर्तन और धार्मिक आयोजन न केवल धार्मिक चेतना को जीवित रखते हैं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी गति प्रदान करते हैं। किंतु इन आयोजनों के साथ ही एक गंभीर और अक्सर उपेक्षित समस्या सामने आती हैकृपर्यावरणीय प्रबंधन की चुनौती। धार्मिक भीड़–भाड़ के दौरान उत्पन्न होने वाला ठोस कचरा, प्लास्टिक का अनियंत्रित प्रयोग, अपशिष्ट जल का अनुचित निपटान, और जल स्रोतों पर अत्यधिक दबाव, इस पवित्र स्थल के प्राकृतिक संतुलन को प्रभावित कर रहे हैं। यद्यपि स्थानीय प्रशासन और मंदिर प्रबंधन अस्थायी व्यवस्थाओं के माध्यम से स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं, फिर भी स्थायी और दीर्घकालिक समाधानों का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

वर्तमान परिदृश्य में रैवासा धाम की पर्यावरणीय चुनौतियाँ केवल प्राकृतिक संसाधनों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक और प्रबंधन संबंधी कमियों से भी जुड़ी हुई हैं। वायु और ध्वनि प्रदूषण का बढ़ता स्तर, हरित क्षेत्र में कमी, तथा वृक्षारोपण की अपर्याप्तता यहाँ की पर्यावरणीय गुणवत्ता को प्रभावित कर रही है। श्रद्धालुओं और स्थानीय समुदाय में पर्यावरणीय जागरूकता की कमी के कारण संरक्षण प्रयास अपेक्षित गति नहीं पकड़ पा रहे हैं। परिणामस्वरूप, यदि समय रहते इन चुनौतियों का वैज्ञानिक और सहभागितापूर्ण समाधान नहीं निकाला गया, तो रैवासा धाम न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता खो देगा, बल्कि धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक महत्व पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यही कारण है कि इस शोध पत्र में इन समस्याओं का विस्तृत विश्लेषण और उनके समाधान पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है।

प्रमुख शोध समस्याएँ

- बड़े धार्मिक आयोजनों के दौरान ठोस और तरल कचरे के प्रबंधन की कमी।
- प्लास्टिक और अन्य अपघटनीय अपशिष्ट का अनियंत्रित उपयोग।
- भूजल का अत्यधिक दोहन और जल स्रोतों का प्रदूषण।
- वायु एवं ध्वनि प्रदूषण का बढ़ता स्तर।
- हरित क्षेत्र में कमी और वृक्षारोपण का अभाव।
- पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता और सामूहिक जिम्मेदारी की कमी।

शोध के उद्देश्य (Research Objectives)

इस शोध का मुख्य उद्देश्य रैवासा धाम की पर्यावरणीय चुनौतियों का गहन अध्ययन करना और उनके लिए टिकाऊ एवं व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत करना है। अध्ययन में केवल समस्याओं की पहचान भर नहीं, बल्कि उनके कारण, प्रभाव और समाधान की दिशा में ठोस सुझावों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है, ताकि धार्मिक आस्था और पर्यावरणीय संतुलन के बीच सामंजस्य स्थापित किया जा सके। इस दृष्टि से शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

- **रैवासा धाम की वर्तमान पर्यावरणीय स्थिति का मूल्यांकन करना**

स्थल निरीक्षण, फील्ड सर्वेक्षण और स्थानीय स्रोतों के आधार पर धाम के प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरणीय गुणवत्ता का आकलन।

- **प्रमुख पर्यावरणीय चुनौतियों की पहचान और विश्लेषण करना**

कचरा प्रबंधन, जल प्रदूषण, वायु एवं ध्वनि प्रदूषण, हरित आवरण की कमी, और भीड़ प्रबंधन जैसी समस्याओं की गहन पड़ताल।

- **धार्मिक आयोजनों और पर्यटन गतिविधियों के पर्यावरण पर प्रभाव का अध्ययन करना**

मेलों, भजन संध्याओं और अन्य आयोजनों से होने वाले पर्यावरणीय दबाव का आकलन।

- **स्थानीय समुदाय, मंदिर प्रबंधन और प्रशासन की भूमिका का विश्लेषण करना**

वर्तमान प्रबंधन पद्धतियों, उनकी सीमाओं और सुधार की संभावनाओं का अध्ययन।

- **टिकाऊ और सहभागितापूर्ण समाधान प्रस्तावित करना**

ऐसे सुझाव प्रस्तुत करना जो धार्मिक आस्था, पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक पर्यावरण प्रबंधन तकनीकों के बीच संतुलन स्थापित कर सकें।

शोध पद्धति (Research Methodology)

यह शोध वर्णनात्मक (Descriptive) और विश्लेषणात्मक (Analytical) प्रकृति का है, जिसमें रैवासा धाम की पर्यावरणीय चुनौतियों और उनके समाधान का गहन अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में राजस्थान के सीकर ज़िले स्थित रैवासा धाम का चयन किया गया, क्योंकि यहाँ धार्मिक पर्यटन और वार्षिक मेलों से उत्पन्न पर्यावरणीय दबाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। डेटा संग्रह हेतु प्राथमिक स्रोतों में स्थल–निरीक्षण, स्थानीय निवासियों और मंदिर प्रबंधन के साक्षात्कार, तथा फील्ड सर्वेक्षण का उपयोग किया गया, जबकि द्वितीयक स्रोतों में सरकारी रिपोर्ट, शोध लेख और समाचार पत्र शामिल किए गए। विश्लेषण के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों पद्धतियों का प्रयोग किया गया, जिससे समस्याओं के कारण, प्रभाव और समाधान का समग्र मूल्यांकन संभव हो सके।

शोध पद्धति के मुख्य बिंदु

- अध्ययन का प्रकार – वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक।
- अध्ययन क्षेत्र का चयन – सीकर ज़िले का रैवासा धाम।
- प्राथमिक स्रोत – स्थल–निरीक्षण, साक्षात्कार, फील्ड सर्वेक्षण।
- द्वितीयक स्रोत – सरकारी रिपोर्ट, शोध पत्र, समाचार पत्र और ऑनलाइन पोर्टल।
- डेटा विश्लेषण पद्धति – गुणात्मक और मात्रात्मक तकनीकों का उपयोग।
- विशेष ध्यान – स्थल–आधारित अवलोकन, साहित्य समीक्षा, और स्थानीय सहभागिता।

प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएँः

रैवासा धाम, जहाँ प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालु धार्मिक आस्था के साथ आते हैं, आज कई गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं से जूझ रहा है। बड़े धार्मिक आयोजनों और मेलों के दौरान उत्पन्न ठोस एवं तरल कचरे का उचित

निपटान न होना, प्लास्टिक और अन्य अपघटनीय पदार्थों का अत्यधिक उपयोग, तथा कचरा प्रबंधन के स्थायी ढाँचे का अभाव यहाँ की स्वच्छता और पर्यावरणीय संतुलन को प्रभावित कर रहा है। भूजल का अत्यधिक दोहन और जल स्रोतों में प्रदूषण बढ़ने से जल की गुणवत्ता में गिरावट आई है, जबकि भीड़–भाड़ और वाहन आवाजाही के कारण वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण के स्तर में वृद्धि देखी जा रही है। इसके अलावा, हरित क्षेत्र का सिकुड़ना और वृक्षारोपण की कमी, स्थानीय जलवायु और पारिस्थितिक संतुलन के लिए चुनौती बन चुकी है। इन सभी समस्याओं का सीधा असर न केवल प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ रहा है, बल्कि धाम की पवित्रता, सौंदर्य और धार्मिक पर्यटन की स्थिरता पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। इस प्रकार की प्रमुख समस्याओं को हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं :–

- **कचरा प्रबंधन की समस्या**

रैवासा धाम में कचरा प्रबंधन की समस्या पर्यावरणीय असंतुलन का एक प्रमुख कारण है। धार्मिक आयोजनों, वार्षिक मेलों और दैनिक श्रद्धालु आगमन के दौरान बड़ी मात्रा में ठोस एवं तरल अपशिष्ट उत्पन्न होता है, जिसमें प्लास्टिक की थैलियाँ, डिस्पोजेबल बर्तन, खाद्य पदार्थों के अवशेष, फूल–मालाएँ और धार्मिक सामग्री शामिल होती हैं। वर्तमान में इन अपशिष्टों के निपटान के लिए कोई संगठित एवं स्थायी प्रणाली उपलब्ध नहीं है, जिसके परिणामस्वरूप कचरा मंदिर प्रांगण, आसपास की गलियों और खुले स्थलों में फैल जाता है। प्लास्टिक और अन्य अपघटनीय पदार्थ लंबे समय तक पर्यावरण में बने रहते हैं, जिससे मिट्टी और जल स्रोतों का प्रदूषण बढ़ता है। इसके अतिरिक्त, कचरा जलाने से वायु प्रदूषण में वृद्धि होती है और स्थानीय निवासियों तथा श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस स्थिति को सुधारने के लिए स्रोत–स्तर पर कचरा अलगाव (महतमहंजपवद), जैव अपशिष्ट का कंपोस्टिंग, प्लास्टिक प्रतिबंध, और स्वच्छता के लिए स्थानीय समुदाय एवं श्रद्धालुओं की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है।

- **जल प्रदूषण एवं जल संकट**

रैवासा धाम में जल प्रदूषण और जल संकट की समस्या लगातार गंभीर होती जा रही है। धार्मिक अनुष्ठानों, मेलों और श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या के कारण जल की मांग अत्यधिक बढ़ जाती है, जिससे स्थानीय जल स्रोतों पर भारी दबाव पड़ता है। भूजल का अत्यधिक दोहन न केवल जलस्तर को नीचे धकेल रहा है, बल्कि कई क्षेत्रों में जल की गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। धार्मिक क्रियाकलापों के दौरान उपयोग में आने वाले फूल, तेल, रंग, प्रसाद, और अन्य सामग्री का सीधे जल स्रोतों में निपटान, जल प्रदूषण का एक प्रमुख कारण है। इस प्रदूषित जल में बैक्टीरिया, रासायनिक तत्व और जैविक अपशिष्ट मिलकर स्थानीय निवासियों और श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा करते हैं। इसके अतिरिक्त, बरसाती जल का अपर्याप्त संचयन और वर्षा जल संरक्षण प्रणालियों का अभाव, जल संकट को और गंभीर बना देता है। यदि इस दिशा में समय रहते जल संरक्षण, अपशिष्ट जल उपचार (ूजम ूजमत जतमंजउमदज) और स्वच्छता उपायों को लागू नहीं किया गया, तो भविष्य में रैवासा धाम को पेयजल और स्वच्छ जल दोनों की भारी कमी का सामना करना पड़ सकता है।

- **वायु एवं ध्वनि प्रदूषण**

रैवासा धाम में वायु एवं ध्वनि प्रदूषण की समस्या धार्मिक आयोजनों और बढ़ते पर्यटन दबाव के कारण निरंतर गंभीर होती जा रही है। बड़े मेलों और भजन संध्याओं के दौरान लाउडस्पीकर, ढोल–नगाड़ों और ध्वनि विस्तारक यंत्रों का अत्यधिक प्रयोग ध्वनि प्रदूषण के स्तर को कानूनी सीमा से ऊपर पहुँचा देता है, जिससे न केवल स्थानीय निवासियों और श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य पर असर पड़ता है, बल्कि आस–पास के प्राकृतिक पर्यावरण और पक्षियों के व्यवहार पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार, तीर्थ यात्रियों के वाहनों, डीज़ल जनरेटर और कचरा जलाने से उत्पन्न धुएँ के कारण वायु गुणवत्ता में गिरावट आती है। विशेषकर भीड़–भाड़ के समय धूलकण (च्ड10 और च्ड2.5) और गैसीय प्रदूषकों का स्तर बढ़ जाता है, जो सांस संबंधी रोगों का खतरा बढ़ाता है। यद्यपि कुछ अस्थायी उपाय जैसे लाउडस्पीकर की ध्वनि सीमा निर्धारित करना और सड़क पर नियमित जल

छिड़काव किया जाता है, किंतु स्थायी समाधान हेतु सख्त नियमन, हरित आवरण में वृद्धि, और पर्यावरण–अनुकूल ऊर्जा स्रोतों का उपयोग अनिवार्य है।

- **हरित आवरण में कमी**

रैवासा धाम के आसपास हरित आवरण में कमी, यहाँ के पारिस्थितिक संतुलन और सौंदर्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है। धार्मिक आयोजनों और तीर्थ यात्रियों की बढ़ती संख्या के साथ–साथ पार्किंग, अस्थायी दुकानें और अन्य निर्माण कार्यों के लिए खुली भूमि का अतिक्रमण हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप पुराने वृक्षों की कटाई और हरित क्षेत्र का सिकुड़ना तेज़ी से बढ़ा है। वृक्ष और पौधे न केवल ऑक्सीजन के प्रमुख स्रोत हैं, बल्कि यह धूलकण और प्रदूषकों को अवशोषित कर वायु गुणवत्ता बनाए रखते हैं, साथ ही तापमान को नियंत्रित रखने और वर्षा जल के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हरित आवरण की कमी के कारण गर्मियों में तापमान में वृद्धि, मिट्टी का क्षरण, और स्थानीय जैव विविधता में गिरावट देखी जा रही है। वर्तमान में वृक्षारोपण के प्रयास किए जाते हैं, किंतु इनकी संख्या, प्रजातियों का चयन, और रखरखाव पर्याप्त नहीं है। इस समस्या के समाधान के लिए दीर्घकालिक वृक्षारोपण अभियान, पौधों के संरक्षण के लिए स्थानीय समुदाय की भागीदारी, तथा धार्मिक आयोजनों में ''ग्रीन जोन'' की अवधारणा को लागू करना आवश्यक है।

- **पर्यावरणीय जागरूकता की कमी**

रैवासा धाम में पर्यावरणीय प्रबंधन की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है – स्थानीय समुदाय, मंदिर प्रबंधन और श्रद्धालुओं में पर्यावरणीय जागरूकता का अभाव। धार्मिक आयोजनों और मेलों के दौरान अधिकांश श्रद्धालु स्वच्छता और कचरा प्रबंधन के प्रति लापरवाह दिखाई देते हैं, जिससे प्लास्टिक, अपशिष्ट खाद्य पदार्थ और धार्मिक सामग्री का खुले में या जल स्रोतों में निपटान आम बात हो जाती है। इसी प्रकार, मंदिर प्रबंधन और स्थानीय प्रशासन भी अधिकतर अस्थायी उपायों पर निर्भर रहते हैं, जबकि दीर्घकालिक और टिकाऊ पर्यावरणीय रणनीतियों की योजना और क्रियान्वयन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। विद्यालयों, स्थानीय संगठनों और धार्मिक प्रवचनों में पर्यावरण संरक्षण को लेकर विशेष कार्यक्रमों का अभाव भी जागरूकता की कमी को बढ़ाता है। परिणामस्वरूप, लोग अपने धार्मिक कर्तव्यों को तो निभाते हैं, किंतु प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को उसी स्तर पर महत्व नहीं देते। इस स्थिति में सुधार के लिए आवश्यक है कि मंदिर परिसर और आस–पास के क्षेत्रों में स्वच्छता संबंधी सूचना–पट्ट लगाए जाएँ, धार्मिक आयोजनों में पर्यावरण संरक्षण के संदेश शामिल किए जाएँ, और स्थानीय युवाओं को ''पर्यावरण मित्र'' के रूप में प्रशिक्षित कर सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

- **भीड़ प्रबंधन**

रैवासा धाम में धार्मिक आयोजनों, विशेषकर वार्षिक मेलों और प्रमुख पर्वों के समय, श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ती है। इस अचानक बढ़ी जनसंख्या के कारण न केवल मंदिर परिसर, बल्कि आसपास की गलियाँ, सड़कें और पार्किंग स्थल भी अत्यधिक दबाव में आ जाते हैं। भीड़ के अनियंत्रित प्रवाह से स्वच्छता व्यवस्था चरमरा जाती है, कचरे की मात्रा बढ़ जाती है, और जल एवं स्वच्छता सुविधाओं पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है। साथ ही, यातायात जाम, ध्वनि प्रदूषण और आपात स्थितियों में निकासी (मअंबनंजपवद) की कठिनाइयाँ भी बढ़ जाती हैं। वर्तमान में प्रशासन और मंदिर प्रबंधन द्वारा भीड़ नियंत्रण हेतु अस्थायी बैरिकेड, अतिरिक्त पुलिस बल और अस्थायी शौचालय जैसी व्यवस्थाएँ की जाती हैं, किंतु इनका प्रभाव केवल आयोजन की अवधि तक सीमित रहता है। स्थायी समाधान के लिए भीड़ प्रवाह के वैज्ञानिक प्रबंधन, आयोजन स्थल के पुनः डिज़ाइन, डिजिटल टिकटिंग/पास सिस्टम, और स्वयंसेवकों की सक्रिय भागीदारी जैसे कदम उठाना आवश्यक है। इससे न केवल भीड़ का सुव्यवस्थित नियंत्रण संभव होगा, बल्कि पर्यावरणीय दबाव और सुरक्षा जोखिम भी काफी हद तक कम किए जा सकेंगे।

पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान

रैवासा धाम में व्याप्त पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान केवल अस्थायी प्रबंधन उपायों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए एक दीर्घकालिक, समन्वित और सहभागितापूर्ण दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। सबसे पहले, कचरा प्रबंधन के लिए स्रोत–स्तर पर अपशिष्ट का अलगाव, जैव अपशिष्ट का कंपोस्टिंग, और प्लास्टिक के उपयोग पर सख्त नियंत्रण लागू किया जाना चाहिए। जल प्रदूषण एवं जल संकट को दूर करने के लिए वर्षा जल संचयन प्रणाली, अपशिष्ट जल उपचार संयंत्र और जल संरक्षण के पारंपरिक उपायों को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ा जाना चाहिए। वायु एवं ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए हरित क्षेत्र में वृद्धि, धूल नियंत्रण उपाय, तथा ध्वनि स्तर की कानूनी सीमा का पालन अनिवार्य किया जाना चाहिए। हरित आवरण की बहाली हेतु वृक्षारोपण अभियान में स्थानीय समुदाय, विद्यालयों और धार्मिक संस्थाओं की भागीदारी बढ़ानी होगी। सबसे महत्वपूर्ण, पर्यावरणीय जागरूकता और भीड़ प्रबंधन के लिए प्रशासन, मंदिर प्रबंधन और श्रद्धालुओं के बीच एक सतत संवाद और सहयोग आवश्यक है, ताकि धार्मिक आस्था और प्राकृतिक संसाधनों का संतुलन बनाए रखा जा सके।

उक्त सभी समस्याओं के उचित समाधान हेतु निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैंः–

- **कचरा प्रबंधन के लिए ठोस नीति**

रैवासा धाम में कचरा प्रबंधन की समस्या को स्थायी रूप से हल करने के लिए एक स्पष्ट, ठोस और क्रियान्वित करने योग्य नीति का निर्माण आवश्यक है। इस नीति का आधार ''शून्य अपशिष्ट'' (मतव ेजम) सिद्धांत होना चाहिए, जिसमें स्रोत–स्तर पर कचरे का अलगाव (महतमहंजपवद) अनिवार्य किया जाए। जैविक कचरे के लिए स्थानीय स्तर पर कंपोस्टिंग इकाइयाँ स्थापित की जाएँ, जिससे मंदिर परिसर और आस–पास के क्षेत्रों की स्वच्छता बनी रहे तथा उत्पन्न कंपोस्ट का उपयोग वृक्षारोपण और उद्यानों में किया जा सके। प्लास्टिक और अपघटनीय कचरे के लिए पुनर्चक्रण (त्मबलबसपदह) केंद्र विकसित किए जाएँ और आयोजनों के दौरान सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए। इसके साथ ही, कचरा संग्रहण और परिवहन के लिए पर्याप्त संसाधन, प्रशिक्षित मानवबल, और निगरानी तंत्र (डवदपजवतपदह ैलेजमउ) लागू करना अनिवार्य हो। नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु स्थानीय समुदाय, मंदिर प्रबंधन, प्रशासन और स्वयंसेवी संगठनों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए, ताकि कचरा प्रबंधन केवल कागज़ी योजना न रहकर वास्तविक और सतत परिणाम दे सके।

- **जल संरक्षण और अपशिष्ट जल उपचार**

रैवासा धाम में जल संकट और जल प्रदूषण की समस्या को कम करने के लिए जल संरक्षण और अपशिष्ट जल उपचार पर आधारित एक समन्वित नीति आवश्यक है। सबसे पहले, मंदिर परिसर और आस–पास के क्षेत्रों में वर्षा जल संचयन प्रणाली (त्पदूंजमत भ्तअमेजपदह) स्थापित की जानी चाहिए, जिससे भूजल स्तर में सुधार हो सके और पेयजल पर दबाव घटाया जा सके। धार्मिक आयोजनों के दौरान उपयोग होने वाले जल का उचित प्रबंधन सुनिश्चित किया जाए, तथा स्नान और पूजन से उत्पन्न अपशिष्ट जल को सीधे जल स्रोतों में प्रवाहित करने के बजाय अपशिष्ट जल उपचार संयंत्र (जम ूंजमत ज्तमंजउमदज च्संदज) के माध्यम से शुद्ध किया जाए। इस उपचारित जल का पुनः उपयोग उद्यानों की सिंचाई, वृक्षारोपण और सफाई कार्यों में किया जा सकता है। इसके साथ ही, श्रद्धालुओं और स्थानीय समुदाय को जल संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए नियमित अभियान चलाए जाएँ, और जल उपयोग पर निगरानी हेतु एक जिम्मेदार समिति गठित की जाए। इन उपायों के माध्यम से रैवासा धाम में जल की गुणवत्ता और उपलब्धता दोनों को दीर्घकालिक रूप से संरक्षित किया जा सकता है।

- **वायु एवं ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण**

रैवासा धाम में वायु एवं ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए सख्त नियमन और पर्यावरण–अनुकूल उपायों का समन्वय आवश्यक है। वायु प्रदूषण कम करने हेतु मंदिर परिसर और आस–पास के क्षेत्रों में हरित पट्टियाँ (ळतममद ठमसजे) विकसित की जाएँ, जो धूलकण और प्रदूषकों को अवशोषित कर वायु की गुणवत्ता सुधार सकें। धार्मिक आयोजनों के दौरान धूल नियंत्रण के लिए सड़कों और खुले स्थलों पर नियमित जल छिड़काव किया जाए, साथ ही कचरा जलाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए। वाहनों से होने वाले उत्सर्जन को कम करने के लिए पार्किंग स्थल मंदिर परिसर से दूर निर्धारित किए जाएँ और श्रद्धालुओं के लिए शटल सेवाएँ चलाई जाएँ। ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण के लिए लाउडस्पीकर और ध्वनि विस्तारक यंत्रों के उपयोग की समय और ध्वनि–सीमा का कड़ाई से पालन कराया जाए, तथा आयोजनों में साइलेंट जनरेटर और आधुनिक साउंड सिस्टम का उपयोग किया जाए। इसके अतिरिक्त, ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव को कम करने के लिए ''नो हॉर्न ज़ोन'' और ''साइलेंस ज़ोन'' के संकेतक लगाए जाएँ। इन उपायों से न केवल पर्यावरणीय संतुलन बना रहेगा, बल्कि श्रद्धालुओं के आध्यात्मिक अनुभव की गुणवत्ता भी बढ़ेगी।

- **हरित आवरण की बहाली**

रैवासा धाम और उसके आसपास के क्षेत्रों में हरित आवरण की बहाली पर्यावरणीय संतुलन, वायु गुणवत्ता और स्थानीय जैव विविधता के संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए सबसे पहले एक दीर्घकालिक वृक्षारोपण योजना बनाई जानी चाहिए, जिसमें स्थानीय जलवायु के अनुकूल और अधिक ऑक्सीजन उत्सर्जित करने वाली प्रजातियों का चयन किया जाए। मंदिर परिसर, पार्किंग स्थल और खाली पड़ी भूमि पर व्यवस्थित रूप से पौधारोपण किया जाए, साथ ही नालों और जल स्रोतों के किनारे हरित पट्टियाँ विकसित की जाएँ, जिससे मिट्टी क्षरण और जल प्रदूषण को रोका जा सके। वृक्षारोपण केवल औपचारिक कार्यक्रम न बनकर, रखरखाव और संरक्षण के लिए स्थानीय समुदाय, विद्यालयों, स्वयंसेवी संगठनों और मंदिर प्रबंधन की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। धार्मिक आयोजनों में श्रद्धालुओं को पौधों का वितरण कर ''एक श्रद्धालुदृएक पौधा'' अभियान चलाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, उपयुक्त सिंचाई व्यवस्था और पौधों की सुरक्षा हेतु संरक्षक ढाँचे (ज्तमम ळनंतके) लगाना अनिवार्य है। इस प्रकार, हरित आवरण की पुनर्स्थापना न केवल पर्यावरणीय प्रदूषण को कम करेगी, बल्कि रैवासा धाम के धार्मिक और प्राकृतिक सौंदर्य को भी पुनर्जीवित करेगी।

- **पर्यावरणीय जागरूकता एवं शिक्षा**

रैवासा धाम में पर्यावरणीय चुनौतियों के स्थायी समाधान के लिए स्थानीय समुदाय, मंदिर प्रबंधन और श्रद्धालुओं के बीच पर्यावरणीय जागरूकता और शिक्षा को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। इसके अंतर्गत सबसे पहले मंदिर परिसर और आस–पास के क्षेत्रों में सूचना–पट्ट एवं पोस्टर लगाए जाएँ, जिन पर स्वच्छता, जल संरक्षण, कचरा प्रबंधन और प्रदूषण नियंत्रण के संदेश स्पष्ट रूप से लिखे हों। धार्मिक आयोजनों और प्रवचनों में पर्यावरण संरक्षण से जुड़े विशेष सत्र शामिल किए जाएँ, ताकि श्रद्धालु इसे अपनी आस्था और कर्तव्य का हिस्सा समझें। विद्यालयों और महाविद्यालयों में पर्यावरण क्लब बनाकर युवाओं को ''पर्यावरण मित्र'' के रूप में प्रशिक्षित किया जाए और उन्हें मेलों एवं आयोजनों में स्वच्छता अभियान से जोड़ा जाए। स्थानीय स्वयंसेवी संगठन, पंचायत और प्रशासन मिलकर जन–जागरूकता रैलियाँ, वृक्षारोपण कार्यक्रम और प्लास्टिक मुक्त अभियान नियमित रूप से आयोजित करें। सोशल मीडिया और स्थानीय रेडियो का उपयोग करके पर्यावरणीय संदेशों का व्यापक प्रचार किया जाए। इस प्रकार, शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से रैवासा धाम में न केवल पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता बढ़ेगी, बल्कि उनके समाधान में जनभागीदारी भी सुनिश्चित होगी।

- **भीड़ प्रबंधन के लिए स्थायी योजना**

रैवासा धाम में धार्मिक आयोजनों और मेलों के समय बढ़ती भीड़ को सुव्यवस्थित और सुरक्षित रूप से नियंत्रित करने के लिए एक स्थायी एवं वैज्ञानिक भीड़ प्रबंधन योजना आवश्यक है। इसके अंतर्गत सबसे पहले मंदिर परिसर और आस–पास के क्षेत्रों का मानचित्रण (डंचचपदह) कर प्रवेश और निकास मार्गों को स्पष्ट रूप से

चिह्नित किया जाए, ताकि श्रद्धालुओं का आवागमन एक दिशा में नियंत्रित हो सके। भीड़ के दबाव वाले समय में डिजिटल टिकटिंग या पास सिस्टम लागू किया जाए, जिससे आगंतुकों की संख्या पूर्व–निर्धारित सीमा में रखी जा सके। प्रमुख आयोजनों के दौरान प्रशिक्षित स्वयंसेवकों और सुरक्षा कर्मियों की पर्याप्त तैनाती की जाए, जो भीड़ को निर्देशित करने के साथ–साथ आपात स्थितियों में त्वरित सहायता प्रदान कर सकें। पार्किंग स्थल मंदिर परिसर से दूर बनाए जाएँ और श्रद्धालुओं के लिए शटल सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ, ताकि यातायात का दबाव कम हो। साथ ही, सीसीटीवी कैमरे और सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली का उपयोग करके भीड़ की निगरानी और नियंत्रण सुनिश्चित किया जाए। इस स्थायी योजना के क्रियान्वयन से न केवल श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा में वृद्धि होगी, बल्कि पर्यावरणीय दबाव भी काफी हद तक कम किया जा सकेगा।

- **स्थानीय सहभागिता**

रैवासा धाम के पर्यावरणीय प्रबंधन में स्थानीय समुदाय की सहभागिता सबसे महत्वपूर्ण और स्थायी समाधान के रूप में उभर सकती है। मंदिर परिसर और आस–पास के क्षेत्रों में रहने वाले लोग, पर्यावरणीय समस्याओं और उनके समाधान के प्रत्यक्ष साक्षी होते हैं, इसलिए उनकी सक्रिय भागीदारी से न केवल योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन संभव है, बल्कि इनका दीर्घकालिक प्रभाव भी सुनिश्चित होता है। स्थानीय निवासियों, दुकानदारों, स्वयंसेवी संगठनों, पंचायत प्रतिनिधियों और युवाओं को ''पर्यावरण मित्र'' के रूप में प्रशिक्षित किया जा सकता है, जो कचरा प्रबंधन, वृक्षारोपण, जल संरक्षण और स्वच्छता अभियानों में अग्रणी भूमिका निभाएँ। धार्मिक आयोजनों के दौरान स्थानीय स्वयंसेवकों को भीड़ प्रबंधन, स्वच्छता नियंत्रण और आगंतुकों को जागरूक करने के कार्य में लगाया जा सकता है। इसके अलावा, स्थानीय विद्यालयों और महाविद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम चलाकर युवाओं को संरक्षण कार्यों से जोड़ा जा सकता है। प्रशासन और मंदिर प्रबंधन को भी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी योजनाओं में स्थानीय लोगों की राय और सुझाव शामिल हों, ताकि वे योजनाओं को अपनी जिम्मेदारी समझकर अपनाएँ। इस तरह, स्थानीय सहभागिता से रैवासा धाम में पर्यावरणीय संरक्षण एक सामूहिक प्रयास बन सकता है, जो आस्था और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करेगा।

निष्कर्ष

रैवासा धाम न केवल एक धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि यह स्थानीय संस्कृति, सामाजिक एकता और पर्यावरणीय संतुलन का भी प्रतीक है। किंतु बढ़ते धार्मिक पर्यटन, अव्यवस्थित आयोजनों और आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव से यहाँ की पर्यावरणीय स्थिति लगातार दबाव में है। कचरा प्रबंधन, जल प्रदूषण, वायु एवं ध्वनि प्रदूषण, हरित आवरण में कमी, जागरूकता का अभाव और भीड़ नियंत्रण जैसी चुनौतियाँ अब केवल प्रशासनिक मुद्दे नहीं, बल्कि सामुदायिक जिम्मेदारी भी बन गई हैं। इस शोध से स्पष्ट है कि इन समस्याओं का समाधान केवल अस्थायी प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए दीर्घकालिक योजना, ठोस नीतियाँ, आधुनिक तकनीक और स्थानीय सहभागिता का सम्मिलित दृष्टिकोण आवश्यक है। यदि कचरा प्रबंधन, जल संरक्षण, हरित आवरण बहाली, प्रदूषण नियंत्रण और जन–जागरूकता के उपाय नियमित रूप से लागू किए जाएँ, तो रैवासा धाम को न केवल स्वच्छ और पर्यावरण–अनुकूल बनाया जा सकता है, बल्कि इसे अन्य धार्मिक स्थलों के लिए एक आदर्श मॉडल के रूप में भी स्थापित किया जा सकता है। इस प्रकार, आस्था और पर्यावरण संरक्षण का संतुलन बनाए रखते हुए, रैवासा धाम आने वाली पीढ़ियों के लिए भी अपनी पवित्रता और प्राकृतिक सौंदर्य को संरक्षित रख सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986। भारत सरकार, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय।
2. शर्मा, ओ.पी. (2018). भारत में धार्मिक पर्यटन और पर्यावरणीय चुनौतियाँ। नई दिल्लीः अवध पब्लिकेशन।
3. मिश्रा, ए.के. (2020). सतत विकास और पर्यावरणीय प्रबंधन। जयपुरः राजस्थानी ग्रंथ अकादमी।

4. सीकर जिला सांख्यिकी विभाग (2023). सीकर जिले की वार्षिक पर्यावरणीय रिपोर्ट। सीकरः जिला कलेक्टर कार्यालय।

5. राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (2022). राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण वार्षिक रिपोर्ट। जयपुरः आरपीसीबी।

6. वर्मा, एस. (2019). ''धार्मिक स्थलों पर अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौतियाँ।'' भारतीय पर्यावरण जर्नल, खंड 15, अंक 2, पृष्ठ 45–53।

7. Singh, R. & Gupta, P. (2021) Sustainable Waste Management Practices at Pilgrimage Sites, New Delhi: Academic Press.

8. The Hindu (2023), "Environmental Concerns Rise at Pilgrimage Sites" Retrieved from https:www-thehindu.com

9. Down To Earth (2022), "Water Pollution and Waste Challenges in Religious Tourism" Centre for Science and Environment.

10. Government of India (2021), National Mission for Clean Ganga – Guidelines for Waste and Water Management at Religious Sites- Ministry of Jal Shakti.

❖◆❖